भारतीय परिवेश में किन्नर जीवन की भूमिका

(Role of Transgender life in Indian Environment)

डॉ० नम्रता जैन

डॉ० कल्पना जैन डॉ० रत्नेश कुमार जैन

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।

भारतीय परिवेश में किन्नर जीवन की भूमिका

डॉ0 नम्रता जैन

डॉ0 कल्पना जैन

डॉ0 रत्नेश कुमार जैन

© **डॉ0 नम्रता जैन**

प्रथम संस्करण : २०२१

ISBN 978-93-92611-33-9

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-508, गली नं०17, विजय पार्क, दिल्ली-110053

दूरभाष : 08527 460252, 09990236819

E-Mail : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस

ए-9, नवीन इनक्लेव गाज़ियाबाद,

उत्तरप्रदेश, पिन-201102

मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

अनुक्रमणिका

संपादक की कलम से 05

खंड {अ} हिंदी

1. सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य में किन्नर जीवन 09
   डॉ. रमेश प्रसाद कोल
2. इक्कीसवीं सदी और किन्नर जीवन 16
   श्री सुनील कुमार
3. थर्ड जेंडर: का भारतीय समाज में समावेशन 20
   डॉ. रेणु कुमारी
4. साहित्य में किन्नरों की व्यथा कथा- 25
   लूनेश कुमार वर्मा (व्याख्याता)
5. विस्थापित किन्नर का दर्द : 'हम भी इंसान हैं' के संदर्भ में 29
   कविता चूर
6. किन्नरों का वर्तमान, भविष्य और सामाजिक स्थिति 32
   निशा गौतम
7. भारतीय समाज और किन्नर जीवन 38
   कांता देवी
8. भारतीय समाज में किन्नर : साहित्य और सिनेमा 46
   लिलु कुमारी रजक
9. किन्नरों का सामाजिक-आर्थिक जीवन: एक अध्ययन 52
   संतोष कुमार
10. भारतीय समाज और किन्नर जीवन 57
    प्रो संगीता सिंह.
11. हिंदी साहित्य में किन्नर जीवन 61
    डॉ. (सुश्री) राणी बापू लोखंडे
12. किन्नर रूपों का चितेरा युवा कलाकार गजेन्द्र सिंह 74
    शिवम् गुप्ता

10

भारतीय समाज और किन्नर जीवन

प्रो.संगीता सिंह
सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
श्योपुर म.प्र.

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध और 21वीं सदी के आरंभ में हिंदी साहित्य जगत में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, जैसे महत्वपूर्ण विमर्श आंदोलन के रूप में उभरकर सामने आए। ऐसा ही एक महत्वपूर्ण विमर्श हमारे साहित्य से निकलकर संपूर्ण समाज के सामने आया है वहहैकिन्नर विमर्श। सदियों से हाशिएका जीवन जी रहे किन्नर कहे जाने वाले थर्ड जेंडर जो अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए यह लड़ाई लड़ रहे हैं मानव होते हुए भी समाज से बहिष्कृत करदिए जाते हैं ऐसा नहीं है कि समाज को उनसे किसी प्रकार का खतरा है, फिर भी पता लगते ही कि हमारा बेटा या बेटी थर्ड जेंडर है उसे घर से निकाल दिया जाता है घर से निकालने के साथ ही उससे उसकी पहचान भी छीन ली जाती है यह घोर अपराध किया जाता है उसे समाज उस सभ्य समाज द्वारा जो सबकाहितैषी कहा जाता है उस बच्चे को यह समाज, माता पिता, इसलिए बहिष्कृत कर देते हैं कि वह सामान्य मनुष्य की भांति नहीं है समाज का दोहरा रवैया तो देखो उसी समाज के व्यक्ति पारिवारिक अनुष्ठानों में आशीष देने के लिए उन्हेंअपनेघर आमंत्रित भी करते हैं घर में बच्चा पैदा हो, या वैवाहिक समारोह हो, उनसे आशीर्वाद जरूर लिया जाता है। पर कोई भी व्यक्ति थर्ड जेंडर को अपने घर में नहींरखना चाहता है, विडंबना तो देखो प्रकृति नेतो उनके साथ छलावा किया ही है यह समाज जो मनुष्य को असल रूप में मनुष्य बनाता हैबच्चोंमें मानवीय गुणों का समावेश करता है। उस समाज में थर्ड जेंडर के लिए कहीं कोई जगह नहीं है।

किन्नर विमर्श या तीसरी सत्ता का संघर्ष भी हम कह सकते हैं जो आजभी निरंतर संघर्षशील है औरों की तरह जीवन जीनेकेलिए। किन्नर भी समाज का हिस्सा बनना चाहते हैं, किन्नर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी के संघर्ष और न्यायिक लड़ाई के परिणाम स्वरुप ही विगत अप्रैल 2015 में उच्चतम न्यायालय ने किन्नरों को तीसरे लिंग के रूप में मान्यता प्रदान

कर दी है यह दुःखदप्रसंग है कि किन्नर हमारे ही बीच के प्राणी होते हुए भी उनके साथ जानवरों सा बर्ताव किया जाता है उन्हें समाज में केवल मनोरंजक के रूप में देखा जाता है मनोरंजन से इतर उनका एक अलग अस्तित्व भी है यह समाज के लोग भूल ही जाते हैं। भले आज हम 21वीं सदी में जी रहे हैं और अपने आप को बहुत आधुनिक मानते हैं लेकिन मन मस्तिष्क आज भी संकीर्ण विचारों की जंजीरों में जकड़ा हुआ है सभ्य कहलाने वाला यहसमाज आज भी उनके अस्तित्व को नकार रहा है समाज का यही नकारात्मक रवैया उन्हें कभी कभी अपराधी की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देता है। सामाजिक व्यवस्था के कारण वे अंदर से टूटे हुए हैं जब प्रकृति प्रदत्त लिंग के आधार परउनकेसाथ भेदभाव होता है तो निश्चय ही मानवाधिकारों का हनन होता है।

संसार में केवल दोही लिगों को मान्यता मिली स्त्री और पुरुष इन्हीं दो लिंगोंको सृष्टि का आधार माना गया है किंतु समाज में एक और लिंग उपस्थित है वह है, उभय लिंग या थर्ड जेंडर।जिनको अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग नाम दिए हैं जैसे हिजड़ा किन्नर खुसरा आदि।

चित्रामुद्गल का प्रसिद्ध उपन्यास पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा किन्नर जीवन पर आधारित मानवीय संवेदना से भरपूर उपन्यास है यह उपन्यास किन्नरों के दैनिक यथार्थ, संवेदना, पीड़ा, दर्द से अवगत कराता है पत्र शैली के माध्यम से नए कथ्य और शिल्प मेंरचित एक गंभीर रचना है इस उपन्यास में विनोद उर्फबिन्नी किन्नर के माध्यम से किन्नर समाज की मुश्किलों को उजागर किया है। उस प्राचीन रूढ़ीवादी सामाजिक व्यवस्था पर कुठाराघात किया है जो एक मनुष्य को मनुष्य नहीं समझता मानवमूल्योंको दरकिनार करने वाली इस सामाजिक व्यवस्था के चलते विनोद को सिर्फ 14 वर्ष की अल्पायु मेंस्कूली शिक्षा के दौरान किन्नर चंपाबाई के हवाले कर दिया जाता है और लोगों को बता दिया जाता है कि विनोद की किसी दुर्घटना में मृत्यु हो गई, समाज के इस दोहरे विस्थापन के दर्द के कारण विनोद टूट गया उसे निरंतर अपनी माँ की याद सताती है विनोद ने अपने घर का पता करके अपनी माँ को पत्र के माध्यम से अपनी व्यथा से अवगत कराताहै। उपन्यास की शुरुआत पत्रों के माध्यम से होती है विनोद उर्फ बिन्नी को प्राणों से प्रिय अपनी माँ के बीच के संवाद की कहानी है समाज का यह कैसा चरित्र है जिसमें एक ओर जन्म सेलेकर मृत्यु पर्यंत तक किसी भी मनुष्य को समाज की आवश्यकता जरूर होती हैलेकिन वही समाज विनोद उर्फ बिन्नी को क्यों निष्कासित कर देता है प्रकृति ने उसके साथ जो अन्याय किया है उसमें विनोद का क्या कसूर है।

" खिड़की से सटा खड़ा अब मैं अपने कागज कलम के पास लौट आया हूं लेकिन समझ नहीं पा रहा बा शिव चौक से दाखिल हो दिल्ली के मेक मेरी आंखों में क्यों आसाम आए हैं

आ समय है जब बाहर भीतर एक साथ मेघ बरस रहे हैं तो तुझे लिखी जाने वाली चिट्ठी कैसे हो सकती है"1

पंक्तियां विनोद की मानसिक स्थिति का सटीक चित्रण करती हैं अपनों से दूर पुनीत की जो स्थिति है वह अपने भावों को सिर्फ मां के सामने ही प्रकट कर सकता था और तो कोई नहीं था जो उसकी स्थिति को समझ सकता किन्नरों की आत्मव्यथा एक औरत की आत्मव्यथा होती है मातृत्व और परिवार की चाह में किन्नर कभी-कभी माँ बाप से बिछड़े या त्यागे गए बच्चों का पालन पोषण भी मां-बाप की तरह करते हैं, हाशिए का समुदाय किन्नरों जीवन की व्यथा को उन्होंने झेला है इसलिए माँ बाप द्वारा ठुकराए गए बच्चों का पालन पोषण वह वह माता पिता की भांति ही करते हैं किन्नरों के प्रति समाज के घृणापूर्ण व्यवहार के कारण उन्हें मानसिक संताप सहन करना पड़ता है ये लोग प्राकृतिक सक्षम भले ना हो पर मानवीय संवेदनायें, प्रेम, करुणा और ममता जैसी विशेषताएं स्वाभाविक रूप से उनके ह्रदय में रहती हैं, लेकिन व्यक्त नहीं करते हैं इसका प्रमुख कारण है उनके प्रति समाज का नफरत भरा दृष्टिकोण। "असामाजिक तत्त्वों के हाथ की कठपुतली बनने में जितनी भूमिका किन्नरों के संदर्भ में सामाजिक बहिष्कार-तिरस्कार की रही है, उससे कम उनके पथभ्रष्ट निरंकुश सरदारों और गुरुओं की नहीं । ऊपर से विकल्पहीनता की कुंठा ने उन्हें आंधी का तिनका बना दिया । आधुनिक होते लोग पिछड़ी परम्पराएँ और मान्यताओं में विश्वास नहीं रखते । गुंडागर्दी करने वालों के हाथों में वह अपने शिशु को आशीषने का अधिकार कैसे सौंप सकते हैं ? बुजुर्गों की बेसिर-पैर की बातें । एक ओर आशीषने का सम्मान तो दूसरी ओर उन्हें कलंक मान घर से उसका निष्कासन ।"2

किन्नर समाज की व्यथा तो देखिए समाज में उनको दो वक्त का खाना तो मिल सकता है, पर ठिकाना नहीं, लोग उनके अभिशाप से डरते हैं, आशीष पाना चाहते हैं, लेकिन फिर भी साथ नहीं रख सकते।"जिसके नवजात शिशुओं को ढूंढ़-ढांढ़, नाच-गाने आशीषने पहुँचते हैं आप, उन्हीं के घर दूसरे रोज पहुँचकर देखिए ? घर का दरवाजा आपके मुँह पर भेड़ दिया जायेगा । इस अवमानना को झेलने से इंकार कीजिए । कुली बनिए, मिस्त्री बनिए, ईंट-गारा ढोइए, जो चाहे, सो कीजिए, पाएँगे मेहनत के कौर की तृप्ति ।"3

नीरज माधव ने भी अपने उपन्यास के माध्यम से किन्नर समाज की कठिनाइयों को उजागर करते हुए लिखा है की प्रकृति में तो उन्हें लिंग के आधार पर विकलांग बनाया है लेकिन पेट में तो पूरा दिया है उसे कैसे भरेंगे ना कोई काम देता है ना रोजगार किन्नरों की इन मुश्किलों की ओर समाज का कभी ध्यान ही न गया।

हिजड़े वेश्यावृत्ति करते हैं लूटपाट करते हैं लेकिन उसकी असली वजह है, कोई रोजगार ना होना।

" तन को भगवान ने आधा टुकड़ा बनाया कि किसी लायक नहीं रहे और पेट? पेट तो नहीं बंद करके भेजा वह तो खुला ही है रोज भरो खाली करो।"4

हिजड़ा बच्चा सबसे पहले तिरस्कार अपने ही घर में परिवार से पता है। नाज बीवी 'यमदीप' उपन्यास की प्रमुख पात्र है इस उपन्यास का संपूर्ण कथानक नाज बीवी के इर्द-गिर्द घूमता है, उपन्यास में नीरज माधव ने दिखाया है कि कैसे हिजड़े प्रसव पीड़ा में तड़पती स्त्री की सहायता करते हैं प्रसव पीड़ा के कारण स्त्री के मर जाने बाद उस शिशु को पालते हैं। जब नाज बीवी उस बच्ची का दाखिला कराने स्कूल जाती है तब वहां छात्रों और अध्यापिका में कानाफूसी शुरू हो जाती है नाज बीवी कहती है-

"जब हम धंधे पर नहीं होते, बहन जी तो इस तरह का मजाक हमारे सीने में गाली की तरह लगता है, हम आसमान से तो नहीं टपकते हैं ना? आपकी तरह किसी माँ की कोख से जन्मे हैं, हाड़ मास का शरीर लिए। हमें तो अपने आप दुख होता है इस जीवन पर। आप लोग भी दुखी कर देते हैं।"5

निष्कर्ष-

किन्नर समाज का ही एक अंग होते हुए भी समाज की मुख्यधारा से नहीं जुड़ पाए हैं वर्तमान में कानून ने भी थर्ड जेंडर को मान्यता प्रदान कर देने के पश्चात भी समाज किन्नरों को अपनाने से इंकार करता है। आज भी यह वर्ग हाशिए पर स्थित है जहां वह निरतंरसंघर्षरत है यह कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य और समाज की मानसिकता में किन्नर विमर्श अभी बेहद अपरिपक्व अवस्था में है। समाज की वैचारिकी अभी इन्हें स्वीकार करने में पीछे हटती दिखाई देती है, फिर भी थोड़ी सी जगह देना तो शुरू कर दिया है भविष्य में ही सही पर हम शीघ्र ही वह दिन जरूर देखेंगे जब ये लोग भी समाज में सामान्य लोगों की भांति अपने मूल अधिकारों के साथ जीवन यापन करते दिखाई देंगे।

संदर्भ-

1.पोस्ट बॉक्स नंबर नालासोपाराचित्रामुद्गलसामायिकप्रकाशननईदिल्ली 203
2.वही पृष्ठ संख्या 86
3.वही पृष्ठ 187
4 .यमदीप नीरज माधव पृष्ठसं.45
5. वही पृष्ठ स128.